पारंपरिक जल संरक्षण ढांचे

जानकारी शीट

जल संरक्षण व्यवस्था में वर्षाजल, सतही जल और भूजल का एकत्रण और संग्रहण किया जाता है ताकि पानी की घरेलू, पशुओं की और कृषि संबंधी तमाम स्थानीय ज़रूरतों को पूरा किया जा सके। जल संरक्षण भारत में पिछले 7,000 वर्षों से किया जा रहा है। स्थानीय लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिये पर्यावरण के अनुकूल भिन्न-भिन्न तरह की व्यवस्थाओं को बनाया गया है। नीचे बनी तालिका देश भर के अलग-अलग इलाकों में इस्तेमाल किये जा रहे जल संरक्षण के कुछ प्रतिनिधि तरीकों को सामने लाती है।

प्रकार	ढांचा	क्षेत्र	चित्र
केड़े	केड़े एक विशाल टैंक होता है जिसमें धारा को रोकनेवाले पत्थर, सीमेन्ट या मिट्टी के बने तटबंध होते हैं जिनमें अतिरिक्त जल के बह जाने के मार्ग की, तथा सिंचाई के लिये और नहरों में पानी पहुंचाने के लिये निकास द्वारों की व्यवस्था होती है। केड़े का पानी पीने के लिये, सिंचाई और पशुओं के लिये, तथा भूजल के पुनर्भरण के लिये इस्तेमाल होता है।	कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडू	
फड़ व्यवस्था	इस व्यवस्था में खेती में उपयोग के लिये पानी की दिशा परिवर्तन हेतु नदियों पर बनाये जाने वाले बंधारे (मिट्टी के या सीमेन्ट के तटबंध) होते हैं। इनका नियमित रूप से रखरखाव किया जाता है।फड़ व्यवस्था का पानी मुख्यतः सिंचाई के लिये इस्तेमाल किया जाता है।	महाराष्ट्र के धुले और नासिक जिले	
कुंड	यह क्रॉक्रीट का बना थाल के आकार का एक विशाल ढांचा होता है। इसमें एक भूमिगत टैंक होता है (लगभग 6 मी गहरा और 2.5 मी व्यास वाला) जो केन्द्र में बने गुंबद से ढंका होता है। टैंक की दीवारें चूने और राख से प्लास्टर की जाती हैं। वृत्ताकार संग्रहण क्षेत्र 100 वर्ग किमी तक बड़ा हो सकता है जिसमें टैंक की ओर 3 से 4% का चिकना ढाल होता	राजस्थान के बीकानेर व जैसलमेर जिलों के कुछ रेगिस्तानी गांव	

	है। गुंबद के ऊपर स्थित छिद्र में से बाल्टी डालकर पानी खींचा जाता है। कुंड का पानी पीने के लिये और अन्य घरेलू उद्देश्यों के लिये इस्तेमाल किया जाता है।		
नौला	यह किसी धारा या सोते पर पत्थरों से किनारियों को पाटकर बनाया गया एक अंतःस्रवणीय (परकोलेशन) टैंक या तालाब होता है। नौला के चारों ओर विशाल छायादार वृक्ष लगे होते हैं ताकि उसका वाष्पीकरण से बचाव किया जा सके। पशुओं के लिये अलग नौले बनाये जाते हैं। नौला का पानी मुख्यतः पीने के लिये इस्तेमाल किया जाता है।	कुमाऊं, गढ़वाल और उत्तराखंड इलाके के पहाड़ी क्षेत्र	
ज़िंग	हिमनद के जल की दिशा को मोड़कर उसे ज़िंग नामक संग्रहण टैंक में पहुंचाने के लिये चैनलों का निर्माण किया जाता है। इस पानी का उपयोग मुख्यतः सिंचाई के लिये किया जाता है।	जम्मू और कश्मीर में स्थित लद्दाख और लेह क्षेत्र	
बांस ड्रिप सिंचाई	पहाड़ी सोतों या झरनों से आनेवाले पानी का संग्रहण करने के लिये बांस के पाइपों के विभिन्न व्यासों, लंबाईयों और लगाने की जगहों का चुनाव करके उनके जाल का इस्तेमाल किया जाता है। बड़े व्यासों वाली बांस की चैनलों का इस्तेमाल करके मुख्य चैनल से प्रति मिनिट 18-20 लीटर पानी मोड़कर उपयोग के लिए ले जाया जाता है। छोटे व्यासों वाले बांस के पाइपों का इस्तेमाल करके पौधे के स्थान पर प्रवाह दर को 20-80 बूंद प्रति मिनिट कर दिया जाता है। यह पानी मुख्यतः पान की और काली मिर्ची की फसलों की सिंचाई के लिये इस्तेमाल किया जाता है, और कभी-कभी इस पानी का उपयोग पीने और अन्य घरेलू उद्देश्यों के लिये भी किया जाता है।	मेघालय स्थित चेरापूंजी, मासिनराम पट्टी में स्थित खासी व जैंतिया पहाड़ियों के आदिवासी क्षेत्र	

स्रोतः *ट्रैडीशनल वॉटर हार्वैस्टिंग सिस्टम्स,* सैंटर फॉर ऐनवायरनमैंट ऐजुकेशन, बैंगलोर